B.A. P-II - paper-V Philosophy (H)

Q. Explain the relation between religion and science.
(धर्म और विज्ञान के बीच संबंध की व्याख्या कीजिए।)

— धर्म एक जटिल मानसिक क्रिया है, क्योंकि मस्तिष्क का
कोई एक अंग उसकी व्याख्या करने में असमर्थ है। किसी भी धर्म के लिए
तीन आवश्यक तत्वों का होना आवश्यक है — बुद्धि (reason), भावना
(Feeling) और क्रिया (Working)। धर्म का संबंध मानव के
आन्तरिक जीवन से रहता है, जिसमें इन तीनों तत्वों का समावेश पाया जाता
है। इन तीनों तत्वों में से किसी एक की भी कमी से धर्म की कल्पना नहीं हो
सकती है। धर्म में मानव अपनी बुद्धि और विवेक की सहायता से ईश्वर के
संबंध में खोज करता है, फिर उसे अनुभव करता है और अपनी अनुभूति
को बाह्य क्रियाओं की सहायता से व्यक्त करता है। वैसे तो धर्म के लिए
उपरोक्त तीनों तत्वों का होना आवश्यक है। लेकिन धर्म आंशिक रूप से
बौद्धिक (Rational) कहा जा सकता है। गैलवे ने धर्म की परिभाषा
इस प्रकार दी है — "Religion is a man's faith in a power beyond
himself whereby he seeks to satisfy emotional needs and
gains stability of life, and which he expresses in acts of
worship and service." अर्थात् धर्म मनुष्य के परे एक शक्ति में
विश्वास है जहाँ वह अपनी रागात्मक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि
करता है और जीवन में स्थिरता प्राप्त करता है, जिसे वह पूजा
और सेवा के कार्यों में अभिव्यक्त करता है।

साधारणतः धर्म और विज्ञान एक दूसरे
के विरोधी मालूम पड़ते हैं। इन दोनों का विरोध कई बातों को लेकर
दिखाई पड़ता है। सर्वप्रथम विज्ञान का आधार बुद्धि है परन्तु धर्म का
आधार विश्वास है। विज्ञान प्रकृति के विभिन्न भागों में होने वाली
घटनाओं की बौद्धिक व्याख्या करने की चेष्टा करता है। विज्ञान
में व्यक्तिगत भावों और संवेगों का कोई स्थान नहीं रहता है।
उसके विपरीत धर्म का आधार व्यक्ति के भाव और संवेग से है।
गैलवे के अनुसार भाव और संवेग धर्म के लिए जीवन रक्त (Life
blood) है।

विज्ञान प्राकृतिक घटनाओं के बीच कारण-कार्य के संबंध
की स्थापना का प्रयास करता है; परन्तु धर्म उसके विपरीत अपना
संबंध विश्व सत्ता (Super Natural power) से है। धर्म में हमारा
विश्वास एक ऐसी सत्ता या शक्ति में रहता है, जो हमसे परे है।

Scanned with CamScanner

विज्ञान का संबंध ऐसे तत्वों से है, जिसे तौला या मापा जा सकता है, उसके बारे में विभिन्न आँकड़े प्रस्तुत किये जा सकते हैं। परन्तु धर्म का संबंध मनुष्य के आदर्शों और मूल्यों से जुड़ा है।

विज्ञान प्रकृति के एक विशेष विभाग का ही अध्ययन करता है, परन्तु धर्म में मनुष्य की विश्व और जीवन के प्रति सम्पूर्ण अनुभूतियों का ~~संबंध व्यक्ति से~~ अध्ययन किया जा सकता है। इस अर्थ में धर्म को अति व्यापक प्रक्रिया माना जाता है।

धर्म का विषय आन्तरिक अनुभूति है, परन्तु विज्ञान का क्षेत्र बाह्य तथ्य है। धार्मिक अनुभूतियों का संबंध आत्मा से है और वैज्ञानिक आविष्कारों का संबंध बाह्य सांसारिक विषयों से है। इसी आधार पर धर्म को आत्मनिष्ठ और विज्ञान को वस्तुनिष्ठ माना जाता है।

धर्म का स्वरूप रहस्यात्मक है, जिसकी बौद्धिक या तार्किक व्याख्या पूर्णतः नहीं हो सकती। विज्ञान का स्वरूप पूर्णतः बौद्धिक तथा तार्किक है। वैज्ञानिक तथ्यों को तर्क के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता है। तार्किक व्याख्या के कारण ही वैज्ञानिक निष्कर्ष सर्वमान्य तथा सर्वव्यापक होते हैं, परन्तु रहस्य के कारण धार्मिक निष्कर्ष इनसे भिन्न होते हैं।

विज्ञान का उद्देश्य तथ्यों का कार्य-कारण-मूलक व्याख्या करना है। यह किसी वस्तु को अकारण या अकस्मात नहीं स्वीकार करता, परन्तु धर्म में ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म आदि विषयों की कार्य-कारण मूलक व्याख्या नहीं हो सकती, क्योंकि ये अतीन्द्रिय हैं।

विज्ञान प्रयोगात्मक है। यह प्रयोग के आधार पर सत्यों को सर्वमान्य मानता है। परन्तु धार्मिक विषयों का प्रयोग किसी प्रयोगशाला में संभव नहीं है। इसी कारण धार्मिक विषयों का परीक्षण भी संभव नहीं है। धार्मिक सत्यों का अन्तर्निरीक्षण तो हो सकता है, परन्तु विज्ञान के समान बाह्य परीक्षण नहीं है।

धर्म के नियम शाश्वत या सनातन माने जाते हैं। मनुष्य इनमें परिवर्तन नहीं कर सकता। इसीलिए धार्मिक नियमों को आध्यात्मिक या नैतिक नियम भी कहते हैं। इसके विपरीत विज्ञान के क्षेत्र में कोई भी नियम शाश्वत नहीं। नियम तो परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। इसी कारण विज्ञान के नियमों को प्रगतिशील तथा धर्म के नियमों को परम्परागत माना जाता है।

इन मतभेदों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूर्ण विरोधी हैं। परन्तु इस विषय पर गहन रूप से विचार करने पर बात कुछ और ही प्रतीत होती है।

वस्तुतः विज्ञान और धर्म के बीच केवल मात्रा का अंतर है। ऐसा कहा जा सकता है कि जहाँ विज्ञान अधिक बौद्धिक है, वहीं धर्म अधिक भावनात्मक है। यह कहना कि धर्म में बुद्धि के लिए कोई स्थान नहीं है और विज्ञान में विश्वास के लिए कोई स्थान नहीं है, गलत होगा। धर्म दर्शन धार्मिक अनुभूति की व्याख्या बौद्धिक आधार पर करता है और इस अर्थ में बुद्धि का धर्म में स्थान रहता है। इसी प्रकार विज्ञान भी कुछ मान्यताओं (Postulates) में विश्वास के आधार पर ही आगे बढ़ता है। अतः विज्ञान में भी कुछ अंश तक विश्वास से काम लिया जाता है।

फिर यह कहना गलत होगा धर्म का संबंध प्रकृति से नहीं है। यह सही है कि धर्म का संबंध विश्वातीत सत्ता से रहता है। परन्तु धर्म का प्रारम्भिक बिन्दु प्रकृति ही है। धर्म प्रतिभासित जगत की घटनाओं से ही प्रारम्भ होकर ऐसी सत्ता की ओर बढ़ता है, जो विश्व से परे है।

वस्तुतः धर्म और विज्ञान के बीच विरोध का संबंध नहीं है। ये दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। अतः इन दोनों में अन्योन्याश्रय संबंध है। ये दोनों ही हमारे ज्ञान के अंग हैं। धर्म विभिन्न विज्ञानों के निष्कर्षों में समन्वय स्थापित कर विश्व के विषय में एक पूर्ण दृष्टिकोण देने का प्रयास करता है। अतः इसे विज्ञानों पर निर्भर करना पड़ता है, जिससे वैज्ञानिक निष्कर्ष मानव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। इन निष्कर्षों को वैज्ञानिक खोजों के अनुरूप ही बदलना होता है। अतः धर्म को अवैज्ञानिक कहना दोषपूर्ण होगा।

इसी प्रकार विज्ञान को भी अधार्मिक नहीं कहा जा सकता है। विज्ञान रूढ़िवादी धर्मों का विरोध अवश्य करता है। क्योंकि ये अंधविश्वास पर आधारित होते हैं। परन्तु धर्म दर्शन व्यक्ति की धार्मिक चेतना की बौद्धिक व्याख्या देने की चेष्टा करता है। इस अर्थ में विज्ञान को धर्मविरोधी नहीं कहा जा सकता है। यही कारण है कि Einstein ने 'Science and Religion' में लिखा है, "Science without religion is lame and religion without science is blind.'

(राम[illegible] शर्मा)
दर्शनशास्त्र
[illegible]
जे० एन० एस० कॉलेज, [illegible]

दिनांक 09.08.20